International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2022, Submitted in June 2022, iajesm2014@gmail.com

भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण की भूमिका : आयु और क्षेत्रों के आधार पर एक अनुभवजन्य जांच

जोगिन्दर सिंह, शोधकर्ता, संस्कृत विभाग, सनराइज विशविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ मिनेश जैन, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, सनराइज विशविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

रामायण: सबसे महान और पवित्रतम संस्कृत: महाकाव्यों में से एक है और भारत के संदर्भ में साहित्यं के पहले लिखित टुकड़ों में से एक है। पिछली कुछ शताब्दियों में, कई लेखक महाकाव्य रामायण: के विभिन्न आयामों की खोज कर रहे हैं, जो आध्यात्मिकता, दर्शनं, अर्थशास्त्रं, राजनीतिः, भाषा, संस्कृतिः, काव्यं, साहित्यं, प्रौद्योगिकी च से लेकर हैं। हालाँकि, रामायण: से विषय विश्लेषण के संदर्भ में प्रबंधन लोकप्रिय नहीं लगता, भले ही वाल्मीक रामायण: कई प्रबंधकों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, समकालीन प्रबंधकों की वृद्धि और विकास के लिए रामायण: की प्रासंगिकता की खोज करके साहित्य में अंतर को भरने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं। ये पेपर रामायण: से धार्मिक प्रबन्धन, कार्यप्रेरणा, सतर्कता, सिद्धान्त के सिद्धांतों का पता लगाते हैं जो प्रबंधकीय दक्षता में सुधार के लिए सबक प्रदान करता है। अन्य प्रबंधन डोमेन जैसे लोग प्रबंधन, और रणनीति प्रबंधन में रामायण: की खोज की संभावनाओं पर भी भविष्य में विचार किया जा सकता है।

विशेष शब्द : - रामायण: ,वाल्मीकि रामायण: ,प्रबंधन पाठ।

I. परिचय

रामायण: हिंदू महाकाव्य लोककथाओं में से एक है। एक समझदार व्यक्ति रामायण: को केवल एक कहानी के रूप में ही नहीं बल्कि शिक्षा की एक विधा के रूप में भी देखेगा। वर्षों से, ऋषियों और आचार्यों ने धर्म (दायित्व) करने के अर्थ को अपनाया है। रामायण: हमें पहल, प्रशासन, किताबों में बोर्ड और कुछ सम्मानित अधिकारियों के संगठनों को दिखाता है। कार्यपालिका का निर्देश समान रूप से देर से शुरू होने वाला अनुशासन होना चाहिए।

फिर भी, कार्यकारियों का प्रशिक्षण उतना ही पुराना है जितना विकास, उपक्रमों से निपटने की आवश्यकता लगातार थी। लोग रिहर्सल कर रहे थे कि प्रशासन की किताबें आज के बारे में बात करती हैं। उन्नत भाषाएँ स्टाइलिश नहीं थीं। किसी परिकल्पना या प्रशासन मास्टर द्वारा दी गई सलाह के बजाय व्यावहारिक रूप से दैनिक व्यवसाय करने की वैध आवश्यकता के कारण प्रथाएं अधिक थीं। इनमें से कई प्रथाओं के संदर्भ हमारे पुराने ग्रंथों में पाए जा सकते हैं। वे पवित्र ग्रंथों से बोर्ड अभ्यास में अनुभव लाए जो संघों (अग्रवाल, 2014) में रोज़मर्रा के उपक्रमों की प्रभावी ढंग से देखरेख करने के तरीके पर प्रकाश डाल सकते हैं।

"जीवनस्य समस्तस्य रामायणं मूलम्। नान्यः पन्था विद्यते अयने विप्रतिपत्तौ।।"

का अर्थ है "रामायण जीवन के सभी पहलुओं की नींव है। संघर्ष और भ्रम के समय में अनुसरण करने के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं है।"

भले ही, एक सामान्य दृष्टिकोण के अनुसार, ऐसे सभी संदेशों ने बोर्ड बनाने और प्रथाओं में सुधार किया है। वर्तमान लेख में रामायण: में दी गई प्रामाणिक जानकारी पर ध्यान केंद्रित किया गया है। रामायण: भगवान राम: के जीवन और समय के अनुभव को दर्शाती है, शायद भगवान के भारतीय देवताओं में दिव्य जानवरों के बारे में सबसे अधिक गाया जाता है। रामायण: के विभिन्न वर्गीकरण हैं, जिन्हें विभिन्न भाषाओं में व्याख्यायित किया गया है; हालाँकि, दो सबसे उल्लेखनीय सुधार ऋषि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसी दास के हैं, जिन्होंने रामायण: और राम चरित मानस: को सीधे तौर पर रामायण: के रूप में संदर्भित किया है। यह सबसे चौंकाने वाली भारतीय कहानी हो सकती है जो शासन की घटनाओं और उन आकाओं की उपस्थिति की पेशकश करती है जिन्होंने उपस्थिति को पार कर लिया है।

भारत अपनी संघ परिकल्पनाओं और राम राज्य: को अच्छी मिलीभगत के मॉडल के रूप में खोज रहा है, हम इस महाकाव्य से विभिन्न मॉडल निकाल सकते हैं, मुख्य रूप से जब हम देखते हैं कि राज्य को कैसे चलाया जा रहा है, इसके साथ सब कुछ ठीक नहीं है। पश्चिम की ओर

देखने के बजाय, आइए हम सिस्टम के लिए अंदर की ओर देखें। जबकि हार्वर्ड, व्हार्टन, और स्टैनफोर्ड, भले ही संबद्धता सिद्धांत और व्यवहार पर अपना प्रभाव बनाए रख सकते हैं, भारतीय महाकाव्य भी आवश्यकता के अनुसार संबंधों पर गारंटीकृत रचना के रूप में कार्य कर सकता है (अग्रवाल, गुप्ता, शर्मा, 2016)।

वाल्मीकि रामायण: ऋषि वाल्मीकि द्वारा 400-500 ईसा पूर्व के बीच लिखा गया था। यह भारतीय इतिहास के पहले पाठों में से एक है, जिसका महत्व विभिन्न आयु, मौसम, लिंग और वेतन के वर्ग में है। इसके महत्व को कई विषयों जैसे अन्य विषयों, नैतिकता, विधायी मुद्दों, इतिहास के लिए कई सेटिंग्स में समझा गया है। अधिकारी उन विषयों में से एक हैं जहां वाल्मीकि रामायण: का शोध और उपयोग प्रतिबंधित है। वास्तव में प्रशासन के भीतर भी वाल्मीकि रामायण: का महत्वपूर्ण प्रशासन में उपयोग अपर्याप्त है। विभिन्न अन्य भारतीय पवित्र ग्रंथों, भगवद गीता, वेदों, उपनिषदों की जांच की गई है ताकि प्रशासन सीखने को वैज्ञानिकों द्वारा हटाया जा सके; हालाँकि, आवश्यक प्रशासन क्षेत्र में रामायण: के उपयोग में एक विशाल सार अंतर है। इस वैचारिक छेद को गढ़ने के लिए अध्ययन किया गया है। यह पत्र संभवतः रामायण: से संबंधित विभिन्न पुस्तकों (काण्डों) में सामरिक प्रबंधन प्रक्रिया की उपस्थिति का प्रमुख रचित अभिलेख है। रामायण: और सामरिक प्रबंधन सोचने के दो अनूठे तरीके हैं, और उनके बीच कुछ साझा हितों का पता लगाने के लिए लेखन में बुद्धिमानी से जांच की आवश्यकता है। महत्वपूर्ण प्रबंधन प्रक्रिया की विभिन्न परिभाषाएँ और दृष्टिकोण हैं जैसा कि अकादमिक अन्वेषण और व्यावहारिक रूप से देखा जाता है। इन सूक्ष्मताओं को समझने और उन्हें वाल्मीकि रामायण: में लागू करने के लिए रामायण: और सामरिक प्रबंधन प्रक्रिया की उचित समझ की आवश्यकता थी। रचनाकारों ने विविध कांडों की जांच के लिए एक दर्शन, "वैदिक हेर्मेनेयुटिक्स" का उपयोग किया। रचनाकारों ने रामायण: के विभिन्न दृश्यों को चित्रित किया है जहां रणनीतिक प्रबंधन प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से लागू किया गया था और एक ऐसा स्थान जहां रणनीतिक प्रबंधन प्रक्रिया के अनुचित उपयोग से वांछित परिणाम नहीं मिले। इस पत्र में, रचनाकारों ने अपने काम को व्यापक रूप से मदद करने के लिए 7 कांडों में विभिन्न भागों से छंदों का हवाला दिया है (चौहान, 2016)।

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

इसका अर्थ है "मातृभूमि और मातृभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है," हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को आकार देने में हमारी जड़ों और संस्कृति के महत्व पर प्रकाश डालती है।

रामायण: ने भारत में और भारत से बाहर रहने वाले लोगों के सामाजिक और पारिवारिक जीवन, संस्कृति और साहित्य पर एक अवर्णनीय और लंबे समय तक चलने वाली छाप छोड़ी है। भारत का प्राचीनतम महाकाव्य रामायण: है। यह ज्ञान का घर है और प्राचीन भारत के सामाजिक और राजनीतिक माहौल के बारे में जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। रामायण: भारत में लोगों के कार्यों और विचारों पर बहुत प्रभाव डालती है। रामायण: एक प्रसिद्ध महाकाव्य होने के नाते, भारतीय हिंदुओं का एक नैतिक कोड है। नैतिक सामग्री के कारण रामायण: की शिक्षाओं को समझना आसान है। रामायण: के उपदेश हमें आदर्श पति, पत्नी, माता, पिता, राजा, सेवक, पुत्र और भाई के बारे में बताते हैं कि उन्हें जीवन में कैसा व्यवहार करना चाहिए। रामायण: हमें बताती है कि एक सभ्य सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ ईमानदारी, वफादारी, सच्चाई, आज्ञाकारिता आदि जैसी अच्छी विशेषताओं पर टिकी होती है।

II. साहित्य की समीक्षा

रामायणः (स्मश इ-या-ना) महाभारत (मामा हा-बा-राता) च अतुलनीयाः भारतीयकथाः दक्षिण एशियायाः प्रमुखलेखनग्रन्थेषु अन्यतमाः सन्ति । उभयत्र चतुरता, आचरणं, गहनगुणं च महत्त्वपूर्णानि उदाहरणानि सन्ति, तथा च मनोरञ्जनरूपेण चिरकालात् प्रयुक्तानि, तथैव बालकान् प्रौढान् च अनुकरणीयव्यवहारस्य शिक्षणस्य पद्धतिरूपेण च येषां कृते तेषां प्रयत्नः कर्तव्यः। कथनस्य घटकाः दक्षिण एशियायाः लेखने, नाट्यशास्त्रे, सांचने, नृत्ये, संगीते, अभियांत्रिकीयां, चलच्चित्रे, व्यक्तिषु, स्थानेषु च नामसु, आश्चर्यजनकरूपेण च राज्यकलायां प्राप्यन्ते **(गुप्ता तथा सिंहः, 2019)**

रामायण: राम का रिकॉर्ड है, अप्रचलित अयोध्या का मुकुट शासक और हिंदू भगवान विष्णु का एक ब्रांड नाम है। इसी प्रकार वे कृति के महापुरूष हैं, जिसका केंद्र राम के प्रकटीकरण को दर्शाने वाला महाकाव्य है। इस ढांचे में, छात्र रामायण: में एक निश्चित अंतर को तोड़ेंगे। वे उस तरीके को अलग कर देंगे जिसमें राम के रिकॉर्ड में भाग शामिल हैं, उदाहरण के लिए, एपिक हीरो साइकिल, जो इसे एपिक सेक्शन कस्टम **(एबिडिन और लस्कर, 2020)** के अंदर रखते हैं।

वाल्मीकिरामायणं रामायणस्य अन्येषां केषाञ्चन स्पष्टविविधतानां कृते परस्परं मिश्रणस्थानं परिवर्तत, यथा, अध्यात्मरामायणं (संस्कृतम्), तुलसीदासरामायणं (हिन्दी), कम्बारामायणं (तमिल), एझुट्टच्चनरामायणं (मलयालम), प्रत्येकस्मिन् च विविधप्रकारस्य रामायणम् भारते राज्यानां लोकभाषासु तदनुसारं दक्षिणपूर्व एशियाई भाषासु इव, उदाहरणार्थं बर्मी, कम्बोडिया, थाई, जावानी, खोटानी, लाओस, मलय, इन्डोनेशिया, तागालोग् च रामायणस्य नाम थाईलैण्ड्देशे रामकिएन्, इन्डोनेशियादेशे सेराट् रामा, मलेशियादेशे हिकायतसेरीरामः, म्यान्मारदेशे यमाप्वे इति, फिलिपिन्स्देशे महाराडियालवाना इति च कथ्यते ***(भट्टाचार्जी, 2017)***

रामायण: में अगर कोई सबसे अच्छा प्रशासनिक गुण था, तो वह सुग्रीव था। उन्होंने राम से काम करवाकर और उनसे अधिक जमीन से जुड़े भाई-बहनों से अपना राज्य वापस पाकर एक अविश्वसनीय प्रशासक के गुण दिखाए **(धमीजा, धमीजा और कुमार, 2017)**।

उनकी प्रशासनिक क्षमता विभिन्न घटनाओं में भी देखी जाती है, मुख्य रूप से जब अंगद ने उनके लिए काम किया। सुग्रीव: को औसत मुखिया समझो; अंगद उनके सबसे तिरस्कृत विरोधियों में से एक बन सकते हैं **(लिम्बासिया, 2018)**।

हालांकि, एक अविश्वसनीय अग्रणी होने के नाते राम: ने खुद को उस दृश्य से बाहर निकाल लिया जहां आगे नेविगेशन शामिल था। इसने हनुमान को अपनी गतिशील क्षमता **(पाठक, सिंह और अंशुल, 2016)** को बहाल करने की अनुमति दी।

III. अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीयों के व्यक्तिगतं और व्यावसायिकं जीवन के परिवर्तन में रामायण: की भूमिका का पता लगाना।
2. भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण: की स्थिति का पता लगाना।

IV. अनुसंधान क्रियाविधि

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक है जहाँ भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण: की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए लिया गया नमूना 150 है। पांच-बिंदु पैमाने पर एक संगठित सर्वेक्षण की सहायता से जानकारी एकत्र की गई और औसत गुणों और टी-टेस्ट की सहायता से जांच की गई।

पञ्चबिन्दुपरिमाणे संगठितमतदानस्य साहाय्येन सूचनाः एकत्रिताः, मध्यमगुणानां, टी-परीक्षायाः च साहाय्येन अन्वेषणं कृतम्

सारिणी 1: प्रतिवादिनां जनसांख्यिकीय रूपरेखा

चराः variables	उत्तरदातृणां संख्या	% आयुः
लिंग"		
पुरुष:	87	58%
स्त्रीणां	63	42%
कुल	**150**	**100%**
व्यवसाय		
व्यापारी	41	27%
अध्यापकः	25	17%
गृहिणी	39	26%
विद्यार्थी	45	30%
कुल	**150**	**100%**
वयः		

20-35	62	41%
35-50	58	39%
50-65	30	20%
कुल	**150**	**100%**

"रामायण परिवर्तयति जीवनं) – रामायण जीवन परिवर्तन करता है।

"जननी जन्मी चंचादपि गरसी" (जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदापी गरियासी) – माता च मातृभूमिः ओसे हिवोवेन्घ् च एते वलुवेन्घाः एतेभ्यः वलुलाइटेभ्यः श्रेष्ठाः सन्ति।

"रामस्य भावः भगवान् मनभावे विशुद्धः सेल" (Ramasya Swayam Charitam Drishtva Vishuddha Manahavet) - रामायण में राम के जीवन का साक्षी होने से शुद्ध मन होता है।

सारिणी 2: माध्य मान:

क्र. सं	भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण: की भूमिका	माध्य स्कोर
1.	रामायण: प्रबंधकों को कुछ शिक्षा प्रदान करता है	4.09
2.	रामायण: प्रबंधकीय दक्षता में सुधार करने में मदद करता है	4.02
3.	रामायण: को प्रबंधन की संस्था माना जाता है	4.08
4.	रामायण: हमें सिखाती है कि रोजमर्रा की जिंदगी की समस्याओं को कैसे हल किया जाए	4.15
5.	रामायण: रणनीतिक सोच से संबंधित है	4.12
6.	रामायण: में सुग्रीव के पास बेहतरीन प्रशासनिक क्षमता थी	4.11
	एक सच्चा लीडर अपनी टीम को अच्छे से समझता है	
7.	नियोजन और दूरदर्शिता प्रबंधकों की आवश्यक क्षमताएं हैं	4.10
8.	रामायण: प्रबंधकों को कुछ शिक्षा प्रदान करता है	4.17
9.	यथा रामः स्वप्रजां सुखिनं कृतवान् तथा प्रबन्धकानां कर्मचारिणः सुखिनः स्थापयितुं आवश्यकता वर्तते।	4.14
10.	यतः रामः सर्वेषां समानं व्यवहारं करोति स्म, तस्मात् सः जनानां प्रेम्णः विश्वासं च प्राप्तवान् यत् एकस्य नेतारस्य अन्यत् समीक्षात्मकं गुणम् अस्ति ।	4.16

सारिणी 3 : टी-टेस्ट के परिणाम

क्र.सं.	भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण: की भूमिका	माध्य स्कोर	t- Value	Sig
1.	रामायणेन प्रबन्धकानां कृते अनेकाः पाठाः प्राप्यन्ते	4.09	7.304	0.000
2.	रामायणः प्रबन्धकदक्षतायाः उन्नयनार्थं सहायकः भवति	4.02	6.054	0.000
3.	रामायण: को प्रबंधन की संस्था माना जाता है	4.08	6.586	0.000
4.	रामायण: हमें सिखाती है कि रोजमर्रा की जिंदगी की समस्याओं को कैसे हल किया जाए	4.15	6.304	0.000
5.	रामायण: रणनीतिक सोच से संबंधित है	4.12	6.310	0.000
6.	रामायण: में सुग्रीव के पास बेहतरीन प्रशासनिक क्षमता थी	4.11	7.002	0.000
	एक सच्चा लीडर अपनी टीम को अच्छे से समझता है			
7.	नियोजन और दूरदर्शिता प्रबंधकों की आवश्यक क्षमताएं हैं	4.10	7.155	0.000
8.	जैसे राम: ने अपनी प्रजा को खुश रखा, प्रबंधकों को अपने कर्मचारियों को खुश रखने की जरूरत है	4.17	8.837	0.000
9.	चूँकि राम: ने सभी के साथ समान व्यवहार किया, उन्होंने लोगों का प्यार और विश्वास प्राप्त किया जो एक नेता का एक और महत्वपूर्ण गुण है	4.14	7.672	0.000
10.	रामायण: प्रबंधकों को कई सीख देता है	4.16	7.963	0.000

तालिका 3 टी-टेस्ट के परिणाम: दिखाती है। तालिका से पता चलता है कि सभी बयानों के लिए महत्व मान 0.05 से नीचे है; इसलिए भारतीयों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के परिवर्तन में रामायण: की भूमिका के संबंध में सभी कथन महत्वपूर्ण हैं।

v. निष्कर्ष:

वर्तमान समय में, विभिन्न सिद्धांतों और मानदंडों के माध्यम से उचित संगठन प्रथाओं के बारे में बात करने वाला बोर्ड, जो सभी खातों द्वारा, एक दूसरे से गलत संचार का सामना करते हुए प्रतीत होता है, नेताओं के विश्लेषकों और विशेषज्ञों को नियमित रूप से परेशान करता है। रामायण: क्षणिक रूप से प्रबंधन पर ऐसे मॉडल प्रस्तुत करता है जो स्पष्ट और तत्काल हैं, और प्रतिभा उनकी व्यापकता में निहित है। आमतौर पर यह माना जाता है कि पर्यवेक्षकों को अलग-अलग लोकाचारों में कार्य करने की आवश्यकता होती है, जिसमें स्पष्ट संघ अभ्यास संस्कृति के लिए आवश्यक भी शामिल है। किसी भी मामले में, यह जांचने की आवश्यकता है कि क्या अग्रदूतों की प्रथाएं हैं जो सामाजिक व्यवस्था, पिछले राष्ट्रों और युगों में भी काम कर सकती हैं। तो फिर, लगातार समाप्त होता है, क्या कोई संघ अभ्यास है जो प्राकृतिक दुनिया से ऊपर उठेगा और हर समय एक वास्तविक रूप से सामाजिक रूप से अलग और मजबूत संघ दृष्टिकोण के लिए मजबूर होगा। व्यावसायिक: दृष्टिकोण से कार्यकारी के उदाहरणों की जांच के लिए लेखक रामायण: के अपरिहार्य पाठों की वकालत करते हैं, विशेष रूप से बिजनेस स्कूलों में। रचनाकार वास्तव में विश्वास करते हैं कि वर्तमान पर्यवेक्षक इस अमूल्य पाठ का उपयोग अपने सामान्य दैनिक जीवन में प्रशासन के महत्वपूर्ण उत्तरों को खोजने के लिए कर सकते हैं।

नित्यशिरसाम् मनसि एतत् प्रवर्तयितव्यं यत् भगवतः रामस्य विजयः कुलीनता, नैतिकता, सदाचारस्य मार्गे गमनात् भिन्नः अस्ति। रामायणस्य विभिन्नेषु दृश्येषु चित्रितं कार्यपालनचक्रम् अपि सम्यक् कीलस्य अनुसरणं कृत्वा आगच्छति ।

वाल्मीकि के रामायण: में समृद्ध पाठ हैं जो प्रबंधकीय प्रभावशीलता के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस पत्र में व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन और प्रबंधन में विभिन्न छंदों और महत्वपूर्ण कार्यों को दिखाया गया है। प्रबंधकीय प्रभावशीलता के आधार पर वाल्मीकि रामायण: की इन सभी पुस्तकों का अन्वेषण करना असंभव था, और इसे इस पेपर की सीमा माना जा सकता है। महाकाव्य: रामायण: से व्यक्तिगत, सामाजिक और प्रबंधन के लिए कई सबक सीखे जाने चाहिए और सफलता के लिए उन्हें लागू किया जाना चाहिए। आधुनिक प्रबंधक रामायण: से मूल्यवान सबक सीख सकते हैं और उन्हें अपने प्रबंधकीय जीवन और प्रभावशीलता में उपयोग कर सकते हैं। यह अनुशंसा की जाती है कि पश्चिमी दृष्टिकोण और प्रबंधन के अध्ययन के साथ-साथ छात्रों को इसके संदेशों के बारे में पढ़ाने के लिए रामायण: के पाठों को प्रबंधन पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। वाल्मीकि की रामायण: का एक मौलिक महत्व यह सिखाना है कि प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किए बिना नैतिक जीवन के साथ कैसे आगे बढ़ना है। भगवान राम सदाचार या धर्म का एक आदर्श उदाहरण हैं। संस्कृत में इसे "रमो विग्रहवन धर्म" कहा गया है, जिसका अर्थ है कि श्री राम धर्म के उदाहरण हैं। वाल्मीकि की रामायण: धार्मिक जीवन का खुलासा करती है। श्री भगवान राम: के जीवन और कार्यों ने महात्मा गांधी को बहुत प्रेरित किया है, और उन्हें उनका गीत **"राम धुन: - रघुपति राघव राम, पतित पावन सीताराम" बहुत पसंद है**। महात्मा गांधी इस गीत के माध्यम से भारत के नेताओं को यह संदेश देना चाहते हैं कि सुशासन हमेशा हमें निराश और निराश लोगों की महिमा करने की ओर ले जाता है, जो लोग "राम राज्य" की तरह गिरते हैं, महात्मा गांधी जी "राम राज्य" की जोरदार वकालत कर रहे थे। भगवान राम: की आदर्श जीवन शैली जीवन के नैतिक मूल्यों को समझने के लिए आधुनिक युग के प्रबंधकों के लिए स्वयं एक संदेश है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे रावण के समान शक्तिशाली भी नष्ट हो सकते हैं।

प्राचीनभारतस्य प्रमुखौ संस्कृतमहाकाव्यौ महाभारतं रामायणं च **(Pallathadka et al., 2020)** हिन्दुधर्मस्य सनाथनधर्मस्य च महत्त्वपूर्णग्रन्थाः सन्ति, ये भारतीयसंस्कृतेः, नीतिशास्त्रस्य, मूल्यानां च पाठ्यपुस्तकानि इति अपि मन्यन्ते स्म । ते व्यक्तिगतवृद्धेः, नेतृत्वस्य, कौशलस्य,

प्रबन्धनस्य च परममार्गदर्शकाः इति अपि दृश्यन्ते । आधुनिककालस्य पाठ्यपुस्तकेषु तान् समावेशयितुं, तेषां मूल्यानि पाठं च दैनन्दिनजीवने कार्यान्वितं कृत्वा सुखदं शान्तं च जीवनं यापयितुं तत्काल आवश्यकता वर्तते।

संदर्भ

[1] अग्रवाल एस., (2014), व्यवसाय प्रबंधन में रामायण: के अनुप्रयोग का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 5(12), 2250-1959।

[2] शर्मा एस., (2016), टुवर्ड्स रैम (रियल अवेकनिंग ऑफ माइंड): ए न्यू पर्सपेक्टिव ऑन रामायण: । आईबीए जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड लीडरशिप, 8(1), 7-15।

[3] चौहान एम., (2016), लीडर्स इन कम्पटीटिव बिज़नेस एनवायरनमेंट: लेसन्स फ्रॉम एनशिएंट टेक्स्ट रामायण: । आईबीए जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड लीडरशिप, 8(1), 26-33।

[4] गुप्ता पी. और सिंह एन., (2019), ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ द स्ट्रैटेजीज़ एंड लेसन्स ऑफ़ टू ग्रेट इंडियन एपिक्स: महाभारत एंड रामायण: । मानविकी, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और सामाजिक विकास में हालिया रुझानों पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आरटीएचटीएमएस 2K19), 9 (विशेष अंक), 310-318।

[5] आबिदिन एन.एफ., लस्कर एफ.आई., (2020), मैनेजिंग डायवर्सिटी इन हिस्ट्री लर्निंग बेस्ड ऑन द पर्सपेक्टिव ऑफ काकाविन रामायण: । परमिता: हिस्टोरिकल स्टडीज जर्नल, 30(2), 193-207।

[6] एबिदिन, एन.एफ., जोबागियो, एच., और सरियातुन, (2018), ए पाथ टू अल्ट्रूइस्टिक लीडर बेस्ड ऑन द नाइन वैल्यूज ऑफ इंडोनेशियन एंड इंडिया रामायण: । पुरुषार्थ: प्रबंधन, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक जर्नल, 10(2), 1-7।

[7] भट्टाचार्जी, ए., (2017), एनशिएंट फिलॉसफी, क्वांटम रियलिटी, एंड मैनेजमेंट। पुरुषार्थ: प्रबंधन, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक जर्नल, 10(43-52)।

[8] धमीजा, ए., धमीजा, एस., और कुमार, ए., (2017), विजडम ऑफ योग एंड मेडिटेशन: ए टाइट रोप टू वॉक। पुरुषार्थ: प्रबंधन, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक जर्नल, 10(1), 117-125।

[9] लिम्बासिया, एन.आर., (2018), मैनेजमेंट इन द भगवद गीता। संकल्प, 8(1), 138-141।

[10] कुमार, डी., महापात्रा, जे., और भुइयां, एम. (2018)। मार्केटिंग के लिए भगवद गीता के उपदेश। पुरुषार्थ: प्रबंधन, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक जर्नल, 11(2), 76-88।

[11] जैन्सेन्सविलन, पी., और लिसिटे, डी., (2014), इतिहास शिक्षा और जातीय सांस्कृतिक विविधता। जर्नल ऑफ डिडक्टिक्स। -प्रकाशन का स्थान अज्ञात, 5(1-2), 18-63.

[12] पाठक, पी., सिंह, एस., और अंकिता, अंशुल।, (2016), मॉडर्न मैनेजमेंट लेसन्स फ्रॉम रामायण: । पुरुषार्थ: प्रबंधन, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक जर्नल, 9 (1)।

[13] सोनवलकर, जे., और महेशकर, सी., (2018), चाणक्य का 'अर्थशास्त्र': भारतीय मूल्यों द्वारा प्रबंधन अभ्यास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड बिजनेस मैनेजमेंट, 16(4), 460-473।

[14] वासिनो, पी., अजी एस., कुरनियावान ए., सिंटासिवी, एफए, (2019), फ्रॉम एसिमिलेशन टू प्लुरलिज्म एंड मल्टीकल्चरलिज्म पॉलिसी: स्टेट पॉलिसी टूवर्ड्स एथनिक चाइनीज इन इंडोनेशिया। पारमिता: हिस्टोरिकल स्टडीज जर्नल, 29(2), 213-223।

[15] कुमावत डी., (2019), मैनेजरियल डाइमेंशन्स ऑफ रामायण: : ए मैनेजरियल पॉइंट-ऑफ-व्यू। कंप्यूटर साइंस एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में फ्यूचर रेवोल्यूशन पर इंटरनेशनल जर्नल, 5(3)।

[16] शर्मा जे.के., (2017), प्राचीन भारतीय शास्त्रों की प्रासंगिकता - रामायण: , गीता और तिरुक्कुरल से लिया गया व्यावसायिक ज्ञान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड बिजनेस मैनेजमेंट, 15(3), 278-298।

[17] कुमार डी., महापात्रा जे., (2018), रोल ऑफ स्पिरिचुअल लीडरशिप इन रेस्पोंसिबल एंड सस्टेनेबल ऑर्गेनाइजेशन

[18]- भारत में चुनिंदा संगठनों का एक अध्ययन। एसएमएस जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एंड इनोवेशन, 4(2), 1-12।